ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 47 कुल पृष्ठ-8 14 से 20 सितम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 श्रा. कृ.-10

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयन्ती वर्ष के अवसर पर

विशाल आर्य महासम्मेलन

23 सितम्बर 2023, शनिवार (शहीदी दिवस) स्थान: खटकड़ टोल (जीन्द)

विशिष्ट अतिथि **किरणजीत सिंह जी** शहीदे आजम भगतसिंह के भतीजे

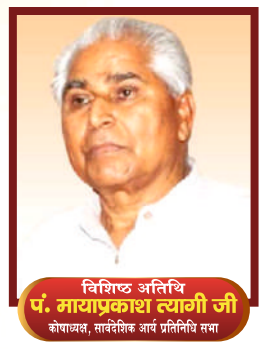

विशिष्ट अतिथि **प्रो. विट्ठलराव आर्य जी** महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

विशिष्ट अतिथि **पं. मायाप्रकाश त्यागी जी** कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी रामवेश जी अध्यक्ष आयोजन समिति

विशिष्ट अतिथि **स्वामी यतीश्वरानन्द जी** पूर्व मंत्री, उत्तराखण्ड

विशिष्ट अतिथि **स्वामी ओमवेश जी** पूर्व गन्ना मंत्री, उत्तर प्रदेश

विशिष्ट अतिथि **वैद्य सत्यप्रकाश आर्य जी** नाड़ी वैद्य कायाकल्प

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष-विशाल आर्य महासम्मेलन

यज्ञ एवं प्रवचन 9 बजे से 10:30

ध्वजारोहण 10:30 बजे

संस्कृति रक्षा सम्मेलन 10:30 से 12:30 बजे तक

महर्षि दयानन्द जन्म जयंती समारोह 12:30 से 3:00 बजे तक

सम्मान समारोह 3:00 बजे

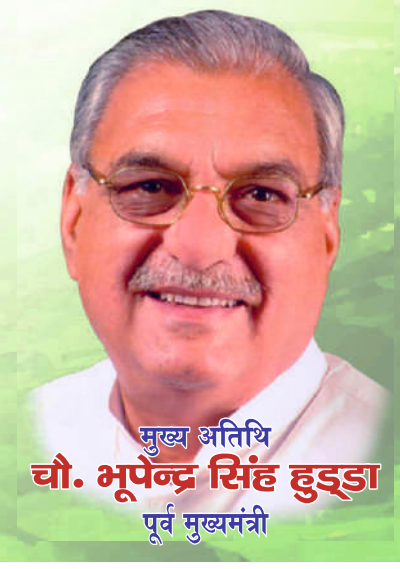

मुख्य अतिथि
चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
पूर्व मुख्यमंत्री

विशेष आमंत्रित

स्वामी ओमवेश जी विधायक (चांदपुर), स्वामी यतीश्वरानन्द जी (पूर्व मंत्री, उत्तराखण्ड), स्वामी विजयवेश जी (गुरुग्राम), स्वामी नित्यानन्द जी (रोहतक), स्वामी यज्ञमुनि जी (मु. नगर), प्रो. वीरेन्द्र जी (राजनैतिक सलाहकार पूर्व मुख्यमंत्री), श्री आर.एस. तोमर जी एडवोकेट (दिल्ली), डॉ. अमरजीत शास्त्री जी (अमेरिका), चौ. हरि सिंह सैनी जी (पूर्व मंत्री हरियाणा), आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी (दिल्ली), श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी (राजस्थान), बहन पूनम आर्या जी, बहन प्रवेश आर्या जी (रोहतक), श्री सहदेव बेधड़क जी (बागपत), बहन कल्याणी आर्या जी (हिसार)

:: निवेदक ::

दलबीर आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा

सज्जन राठी कार्यकारी अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा

अशोक आर्य महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा

रामनिवास आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद

धर्मबीर गोईयां प्रदेश अध्यक्ष लोक शक्ति मंच

रणबीर सिंह ऐडवोकेट राष्ट्रीय प्रवक्ता नरवाल खाप

प्रि. आजाद सिंह राष्ट्रीय उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद

चौ. अजीत सिंह पूर्व विधायक

हरपाल आर्य प्रान्तीय कोषाध्यक्ष

प्रदीप कुमार प्रान्तीय प्रवक्ता

प्रो. आनन्द सिंह अध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा (करनाल)

रामबीर आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष

जयपाल आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष

ऋषिराज शास्त्री प्रान्तीय उपाध्यक्ष

अजय पाल आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष

राजदेव आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष

जिला आयोजन समिति
सतबीर सरपंच, सतबीर पहलवान, देवेन्द्र सहारण, जगफूल ढिल्लों, मांगेराम थानेदार, जयप्रकाश खटकड़, स्वामी मुक्तिवेश, अक्षय लाठर, रघबीर बूरा, योगेश्वर मुनि, सत्यवान कौशिक, टेकराम सरपंच, सूरजमल पहलवान,, सोमवीर पहलवान, मनीष आर्य, श्रवण कुमार आर्य, आशीष सिवाच अजीत गौतम, विरेन्द्र पहलवान, प्रो. धर्मवीर, कर्मपाल आर्य, सूरजमल आर्य, धुलाराम आर्य, महासिंह सरपंच, इन्द्रजीत आर्य, मनजीत कालवा, केवल सिंह आर्य, आचार्य सूर्यदेव दयानन्द आर्य, डा. राजपाल आर्य, कर्ण सिंह रेढ़ू, सुबेर सिंह, रणबीर राठी, आशीष ऐडवोकेट, संदीप बुढायन, सतपाल सरपंच

स्वामी आदित्यवेश मुख्य संयोजक

रणधीर रेढू ऐडवोकेट संयोजक

आयोजक : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं महर्षि दयानन्द द्वि जन्म शताब्दी आयोजन समिति

मुख्य कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली (रोहतक), मो.: 9468165946, 9416086348, 9467125438

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

भारतीय शिक्षा प्रणाली से ही विश्व में सुख शान्ति और समृद्धि आ सकती है

— महावीर धीर शास्त्री

भारत की शिक्षा प्रणाली मानव को प्रकृति, आत्मा, परम आत्मा के सुंदर समन्वय के साथ जीवन जीने को सर्वांगीण रूप में आनन्दमय बनाने की प्रक्रिया का नाम है। भारतीय वाङ्मय में बालक की शिक्षा बालक के गर्भ में आने से पहले माता द्वारा ही आरम्भ हो जाती है। माता–पिता दोनों ही संतान प्राप्ति की इच्छा होने पर अपने को संयमित करके इच्छानुसार उत्तम संतान निर्माण की प्रक्रिया की भावभूमि और आधारभूमि के निर्माण में प्रवृत्त हो जाते हैं। वे उत्तम खान–पान, उत्तम विचार और उत्तम दिनचर्या के साथ जीवनचर्या ध्यान से चलाते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए यथासमय शास्त्र–विधि अनुसार सभी प्रक्रियाएं अपनाकर गर्भाधान करते हैं। गर्भाधान के बाद भी माता के खान–पान, भावनाओं और दिनचर्या का पूरा ध्यान रखा जाता है। पूरा परिवार उत्तम आचार–विचार के साथ प्रेममय व्यवहार का पालन करता है। जीवन को संस्कारित रखने के लिए निश्चित किए सोलह संस्कार निश्चित समय पर कराए जाते हैं। बालक के जन्म के बाद उचित खान–पान और बर्ताव के पालन का अभ्यास बच्चे को धीरे–धीरे कराया जाता है। ज्यों–ज्यों बालक बढ़ता जाता है उसे माता शिष्टाचार की शिक्षा देती रहती है। आयु और ग्रहणशक्ति अनुसार उसे व्यवहारिक और बुद्धि विकास की कहानियां, कविताएं तथा वेदमंत्र कंठस्थ कराए जाते हैं। अक्षर और अंक ज्ञान का भी अभ्यास धीरे–धीरे कराया जाता है।

जब बालक 6 से 8 वर्ष का हो जाता है तब गुरु की गोद में जाने से पहले उसका उपनयन (गुरु के पास जाना) या यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है। उसे जीवन संकल्प के रूप में तीन कर्त्तव्यों को पूर्ण करने के लिए तीन तार का यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। इन्हीं कर्त्तव्यों को पूर्ण करने की तैयारी गुरुजन कराते हैं और रुचि अनुसार अनिवार्य और वैकल्पिक विषयों के ज्ञान का अभ्यास कराया जाता है। शरीर, प्रकृति, मन, बुद्धि, आत्मा और परम आत्मा का गम्भीर ज्ञान वेद शास्त्रों के अध्ययन के साथ कराया जाता है। सभी बालकों को शयन, जागरण, व्यायाम, स्नान, ध्यान, ऋतु अनुसार स्वास्थ्यप्रद खान–पान का समान रूप से उचित अभ्यास कराया जाता है। किसी भी बालक से किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं बरता जाता है। मानव की सकल प्रवृत्तियों का शोधन करके उसे सच्चा, संयमित, स्व–अनुशासित मानव बनाया जाता है। मानवता का अभ्यास करते–करते ऐसा मानव देवता का पद प्राप्त करता है। वेदों, षट्शास्त्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों के अध्ययन और संसार की सबसे छोटी तथा सबसे श्रेष्ठ पुस्तक योगदर्शन के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली से मनुष्य अपनी आत्मा को परम आत्मा में लीन कर देता है। यह मानव विकास की अंतिम मंजिल है। भारतीय शिक्षा प्रणाली ही मानव को चरम ज्ञान और चरम विकास देती है।

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।

यह शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ का कथन है कि मानव का ठीक तरीके से निर्माण तभी होता है जब उसकी माता सत्–चरित्र और धार्मिक हो। भारतीय मनीषा में जो कर्तव्य सुखी जीवन के लिए धारण करने अनिवार्य हैं, उन्हीं का नाम धर्म है। किसी मत, पंथ या सम्प्रदाय को भारतीय संस्कृति में धर्म नहीं कहा गया है। धर्म सबके लिए समान और अनिवार्य है। इसी प्रकार जिस बालक का पिता धर्मात्मा और विद्वान् हो, और फिर गुरु भी विद्वान् जितेन्द्रिय, संतान के समान शिष्यों का पालन करने वाला हो तब मानव का सम्पूर्ण रूप से निर्माण होता है।

इस प्रकार एक उत्तम और स्थायी दिनचर्या पूर्वक दिन रात गुरुजनों के सानिध्य में ज्ञान–विज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति जीवन में अपने ज्ञान का दुरुपयोग नहीं करता है। वह संतुलित रूप में जीवनचर्या चलाता हुआ अपने ज्ञान के सदुपयोग और सद्–व्यवहार से जनमानस की सेवा से पुण्यकर्म करता हुआ स्वयं सुखी रहता है और लोगों को भी अपनी सेवा से सुखी और संतुष्ट करता है।

भारतीय शिक्षा की यही अनुपम प्रणाली है। इसे अपनाकर ही विश्व में सुख शान्ति हो सकती है। भारतीय शिक्षा और गुरु का कार्य यहीं नहीं रुकता है। गुरु ही अपने शिष्य रूपी भावी नागरिक को उसकी योग्यता और सम्पूर्ण व्यक्तित्व के अनुरुप कार्य भी देकर उसे समाज में उतारता है। वह उच्चकोटि के विद्वान् हर तरह से चरित्रनिष्ठ, परमसंयमी शिष्य से ज्ञान बांटने की दीक्षा (संकल्प/शपथ) लेता है। विद्वान् साहसी, धैर्यवान् शिष्य को न्यायकारिता, मानव कल्याण की राजनीति करने की दीक्षा देता है। वैश्य से शत प्रतिशत उत्तम वस्तु निर्माण और बिना छल और लोभ के उचित वितरण की शपथ लेता है तथा मंदबुद्धि शिष्य से सम स्वभाव के व्यक्ति के पास नियुक्त होकर उसकी सच्चे मन से सेवा की शपथ लेकर उन्हें समाज में उतारता है। गुरु वैवाहिक संबंधों को स्थायी और सुखमय बनाने के लिए भी माता–पिता से मिलकर शिष्यों के गुण–अवगुण, कार्य, व्यवहार, स्वभाव, योग्यता, रुचियों का मिलान कराके सहयोग करता है। हम श्रेष्ठ गुरुजनों की नियुक्ति करके बालक की शिक्षा, रोजगार और विवाह की जिम्मेदारी गुरुजनों को ही दे दें तो बिना भेदभाव के, बिना व्यय और मंहगे परीक्षणों, साक्षात्कारों के भ्रष्टाचरण से मुक्ति पा सकते हैं। गुरु ही है जो शिष्य को सम्पूर्ण रूप से जान लेता है।

गुरुकुल परिवार में रहकर अध्ययन करने वाला शिष्य गुरु के सामने नकल नहीं कर सकता। वह अपनी योग्यता का झूठा दिखावा गुरु के सामने बिल्कुल नहीं कर सकता है। आचार्य एवं आचार्या रुचि और योग्यतानुसार बिना भेदभाव के कार्य नियुक्ति कर सकते है। आचार्य एवं आचार्या युवक युवतियों के वैवाहिक संबध स्थायी और सुखकारी बनाने के लिए सबसे उपयुक्त माध्यम बन सकते हैं। विवाह से पहले कार्य नियुक्ति हो। बाद में प्रतिवर्ष सामुहिक रूप से यथासंभव संख्या में संस्था से ही विवाह संस्कार करके युवा जोड़ों को मधुर वाद्यों के नादपूर्वक घरों में छोड़ा जाए। सबको विवाह पूर्व पति पत्नी, पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों, संतान पालन की सम्पूर्ण शिक्षा भी दी जाए।

गृहस्थ आश्रम के बाद वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की अनुपालना भी हो। सामाजिक कार्य तभी श्रेष्ठता से हो पाएंगे। लेकिन यह तभी संभव हो सकेगा जब हम धीरे–धीरे प्रचलित शिक्षा को भारतीयता के अनुरूप ढ़ाल लेंगे। हमें धीरे–धीरे शिक्षा संस्थानों को आवासीय बनाकर उनकी दिनचर्या और पाठ्यक्रम वैदिक पद्धति अनुसार करने होंगे। श्रेष्ठ गुरुजनों और उत्तम आवासीय शिक्षा बिना देश अपराधमुक्त नहीं हो सकता है। क्योंकि शिक्षा के लिए आते–जाते छात्र ही गली–कूचों और बाजारों में घूम–घूम कर बुराइयां सीखते हैं। इन्हें माता–पिता, शिक्षक, फौज या पुलिस कोई बुराइयों से नहीं बचा सकता है। सिवाय श्रेष्ठ शिक्षकों के सानिध्य में श्रेष्ठ आवासीय व्यवस्था वाले वैदिक शिक्षा और व्यवस्था के विद्यालयों से ही बालक चरित्रनिष्ठ बन पाएंगे। तभी समाज और देश भी अपराधमुक्त हो सकेगा। दूसरा कोई उपाय नहीं हो सकता है। भारतीय शिक्षा की यही सार्वभौमिक रूपरेखा है, जिससे मानव, मानव बन सकता है। इसी शिक्षा से विश्व में समानता, सुख, समृद्धि और शान्ति स्थायी हो सकती हैं।

— प्रेमनगर रोहतक, चलभाष — 9466565162.

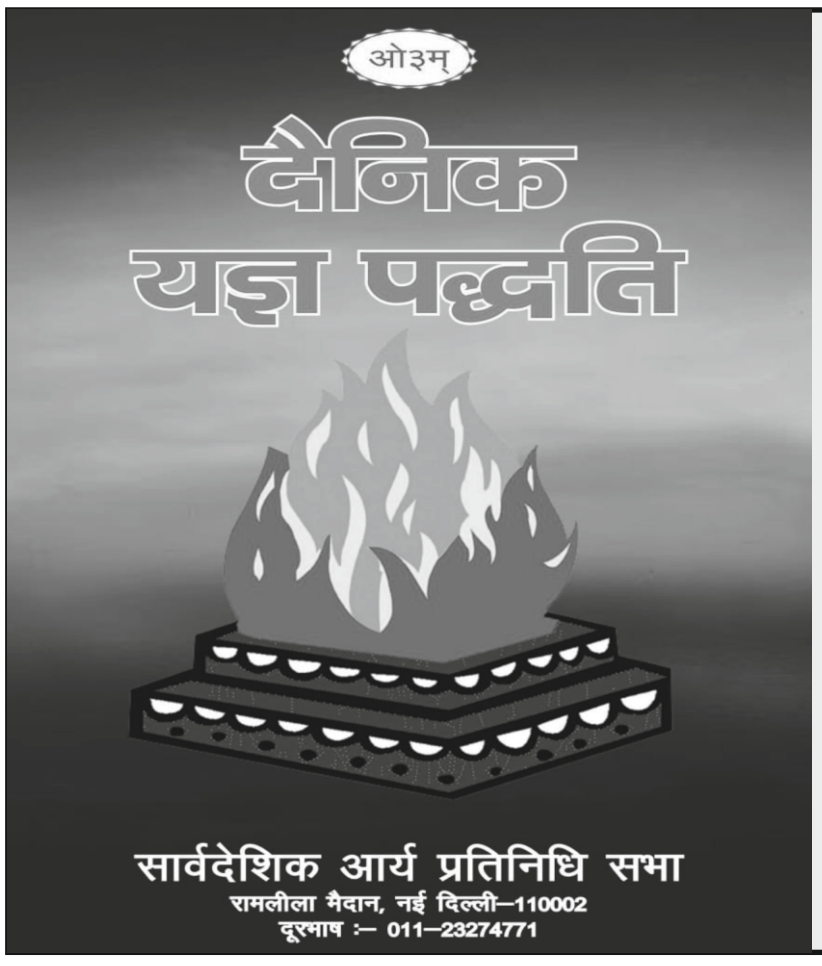

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

विशाल आर्य महासम्मेलन खटकड़ टोल, जिला–जीन्द (हरियाणा) दिनांक : 23 सितम्बर, 2023 शनिवार (शहीदी दिवस) पर आर्य जनता से हार्दिक अपील

सम्माननीय आर्यजन!

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्म शताब्दी 2024 में आ रही है। ऋषि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती को पूरे विश्व में ऐतिहासिक रूप में मनाने के लिए प्रत्येक आर्य उत्साहित है। इस उपलक्ष्य में आगामी 23 सितम्बर, 2023 (शनिवार) को खटकड़ टोल, जिला–जीन्द (हरियाणा) में विशाल आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं महर्षि दयानन्द द्वी जन्मशताब्दी आयोजन समिति के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस महासम्मेलन में हरियाणा प्रान्त तथा आस–पास के प्रदेशों एवं देश के विभिन्न भागों में हजारों की संख्या में आर्य भाई–बहन और युवक/युवतियां भाग लेने के लिए तैयारी कर रहे हैं। समय अब कम रह गया है। अतः आप सभी को जीन्द आने की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। जो आर्यजन जीन्द के सम्मेलन में सम्मिलित होना चाहते हैं वे कृपया अपने आने की सूचना अवश्य ही देने का कष्ट करें। जो आर्य महानुभावों 22 सितम्बर की शाम तक पहुंच रहे हों और कितनी संख्या में जीन्द पहुंचेंगे अवश्य सूचित करें, ताकि आप सभी के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके। देश के अन्य प्रान्तों से आने वाले आर्यजनों को अभी से अपने आने–जाने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित कर लेनी चाहिए।

विशाल आर्य महासम्मेलन, जीन्द, हरियाणा के इस विशाल आयोजन पर लाखों रुपया व्यय होना है जो आप सभी के पवित्र सहयोग से ही पूरा हो सकेगा। अतः हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप स्वयं अपनी ओर से तथा अपने अन्य मित्रों व सहयोगियों को प्रेरित करके अधिक से अधिक दान राशि महासम्मेलन के कार्यालय के पते पर बैंक ड्राफ्ट, चैक आदि से भिजवाने की कृपा करें। आपके इस पवित्र दान से यह महायज्ञ तथा महासम्मेलन निश्चित रूप से ऐतिहासिक होगा। विशाल आर्य महासम्मेलन में आपके स्वागत हेतु आयोजन समिति आव भगत एवं व्यवस्था के लिए दिन–रात परिश्रम कर रही है। हमें पूरा विश्वास है कि आर्यजन दल–बल सहित सम्मेलन में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा का परिचय देंगे। आप किसी भी जानकारी के लिए निम्नलिखित पते स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा पर या दूरभाष संख्या–9468165946, 9416086348, 9467125438 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

स्वामी आर्यवेश
नेता, सार्वदेशिक सभा

प्रो. विट्ठलराव आर्य
महामंत्री, सार्वदेशिक सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा

हम कहाँ से कहाँ ले चले हैं? भारत सरकार का राजपत्र और आर्य समाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के आयोजन के पावन अवसर पर भारत सरकार के राजपत्र दिनांक 17 अगस्त, 2023 के अनुसार भारत सरकार द्वारा उच्च स्तरीय समिति का गठन निश्चित ही उत्साह एवं आनन्ददायक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदोक्त विचारों का नवजागरण करते हुए भारतवर्ष की आजादी में अपना अमूल्य योगदान दिया है। सत्यार्थप्रकाश में निर्दिष्ट प्रथम स्वराज्य की उद्घोषणा महर्षि की ही परिकल्पना है। स्वतन्त्रता का अमृतकाल स्वातन्त्र्य सैनिकों की अमूल्य विरासत है। देर से ही सही किन्तु भारत सरकार ने इस ओर संज्ञान लेकर प्रथम चरण तो उठाया है, हम भारत सरकार के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

उपरोक्त राजपत्र में उल्लिखित भारतवर्ष के राजनैतिक नामों की सूची में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मन्त्री, नेता प्रतिपक्ष, सांसद, मुख्यमन्त्री, राज्यपाल आदि का समुचित उल्लेख किया गया है। यह सरकार की सूझ–बूझ एवं जनतन्त्र का सम्मान है।

आर्य समाज का उद्देश्य एवं महर्षि का उपदेश संगच्छध्वं संवदध्वं के साथ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का है किन्तु उपरोक्त राजपत्र में आर्य समाज की ओर से प्रेषित सूची को सूचीबद्ध करते हुए ऋर्षि के मंतव्य के विपरीत निजी, दलगत व स्वार्थगत नीति दृष्टिगोचर है। महर्षि के 200वीं जन्मजयन्ती का यह पावन पर्व हम आर्यों को किस ओर लेकर जा रहा है, यह चिन्तनीय है? उपरोक्त राजपत्र की सूची में जीवन समर्पित करने वाले संन्यासी, वैदिक विद्वान्, भजनोपदेशक आदि का नाम तथा उनका प्रतिनिधित्व न करना जानबूझ कर किया गया अपराध ही है। आर्य समाज की ज्वाला को हृदय में संजोकर आर्षपाठविधि के लिए समर्पित अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, गुरुकुलीय स्नातक परम्परा के प्रतिनिधि व पतंजलि योगपीठ के महामन्त्री सर्वश्री पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी, परोपकारिणी सभा के महामन्त्री एवं दर्शन योग महाविद्यालय के प्रतिनिधि मुनि आचार्य सत्यजित् जी, भजनोपदेशक प्रतिनिधि अनेक भजनोपदेशकों के निर्माता पं. नरेश दत्त आर्य, वेद के ऊपर होने वाले प्रहारों का उत्तर देने वाली आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति सजग रहने वाले डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के पाठ्यक्रम को संचालित करने वाले कुलपति प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री, पतंजलि विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सोमदेव शतांशु, आर्य समाज के उद्भट्ट विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का नाम न होना तथा और तो और तीन जजों की व्यवस्था में निर्दिष्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के महामन्त्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के नाम का उल्लेख न होना आर्यसमाज के आन्तरिक कमजोरी तथा विवाद को प्रदर्शित कर रहा है।

आर्य समाज द्वारा प्रेषित सूची में ऐसे अनेक नाम हैं, जो कि आर्य समाज के लिए कोई विशेष कार्य नहीं करते, तथापि स्वार्थगत मित्रता, हठ व दुराग्रह को ही प्रदर्शित कर रहे हैं। सत्य ही लिखा है सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में महर्षि ने – 'मनुष्य का आत्मा सत्या–सत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।' यदि इनके नाम देने हैं तब भी हमें कोई आपत्ति नहीं हो रही थी किन्तु उपरोक्त नामों का उल्लेख राजपत्र की सूची में न होना चिन्ता का विषय बना हुआ है। इसका हम आर्यजन घोर विरोध प्रदर्शित करते हैं।

ये सर्व सिद्ध ही है कि 'अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां विमानना। त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्'।।

आर्य समाज जैसी देदीप्यमान संस्था को 150 वर्षों में हम कहाँ से कहाँ ले चले हैं?

– अवनीश आर्य, रठौड़ा,
जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में स्वामी अग्निवेश जी महाराज की तीसरी पुण्यतिथि प्रेरणा सभा के रूप में मनाई गई

स्वामी अग्निवेश जी महाराज का पूरा जीवन समाजसेवा को समर्पित रहा – स्वामी आर्यवेश

स्वामी अग्निवेश ने लाखों मजदूरों को पुनर्वासित करवाया – स्वामी आदित्यवेश

स्वामी अग्निवेश जी महाराज आर्य समाज के सिद्धान्त के सच्चे संवाहक थे – डॉ. मुमुक्ष आर्य

स्वामी अग्निवेश जी अपना सुख त्यागकर लोगों के सुख के लिए कार्य किया – विद्या प्रसाद मिश्र

10 सितम्बर, 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी महारज की तीसरी पुण्यतिथि स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में प्रेरणा सभा तथा फ्री हेल्थ चेकअप कैंप आयोजित करके मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के दो विद्वानों नोएडा के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मुमुक्षु आर्य तथा दिल्ली के आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र को 'स्वामी इंद्रवेश स्मृति विद्वत् सम्मान' से सम्मानित किया गया। इनके अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा शिक्षक अवार्ड से सम्मानित श्री हरपाल आर्य, श्रीमती रेनिका मलिक, श्री विक्रम सिंह तथा श्री जापान सिंह को भी सम्मानित किया गया।

प्रेरणा सभा कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ। जिसका ब्रह्मत्त्व डॉ. श्यामदेव जी ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया। यज्ञ के उपरान्त प्रेरणा सभा में भाग लेने वाले 255 महानुभावों का निःशुल्क हेल्थ चेकअप किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी महाराज की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें मानवता का सच्चा प्रहरी बताया। उन्होंने बताया कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज जातिवाद, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, नारी उत्पीड़न, नशाखोरी तथा समाज में फैली अनेक कुरीतियों के खिलाफ प्रचण्ड अभियान चलाया और वे समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों से समाज को मुक्त करवाने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे। स्वामी अग्निवेश जी ने सतीप्रथा के खिलाफ प्रचण्ड आन्दोलन चलाया और वे तब तक पीछे नहीं हटे जब तक इस कुरीति के खिलाफ कानून नहीं बनवा लिये। उन्होंने हरियाणा में शराबबंदी लागू करवाने में भी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के साथ मिलकर कार्य किया और हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी अग्निवेश जी द्वारा किये गये कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने भरी जवानी में सब कुछ त्यागकर अपना पूरा जीवन आर्य समाज एवं समाज सुधार के कार्यों में लगा दिया। उन्होंने देश में बंधुआ मजदूरी कर रहे गरीब, मजदूर, किसानों, शोषित एवं पीड़ित व्यक्तियों के हक की लड़ाई मुखर होकर लड़ी, इसके लिए उन्होंने हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्री के पद तक की भी परवाह नहीं की। स्वामी जी महाराज कभी भी कुर्सी से चिपकना नहीं सीखा और वे त्याग भाव से समाज के कार्यों एवं मानवता के कल्याण में लगे रहे। आज हम सब ऐसे महान् त्यागी, तपस्वी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी प्रेरणा सभा में उपस्थित हुए हैं। सभी कार्यकर्ता उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलकर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में अपना–अपना योगदान दें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने लाखों मजदूरों को पुनर्वासित करवाने का कार्य किया। उन्होंने ही मजदूरों की पहचान का कानून बनवाया। स्वामी अग्निवेश जी मजदूरों को न्याय दिलवाने के लिए हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्र के पद तक को भी त्याग करने में जरा भी देर नहीं लगाया। स्वामी जी ने जब गरीब मजदूरों की आवाज बनकर उनके हक की बात की, परन्तु जब मजदूरों की बात नहीं सुनी गई तो स्वामी अग्निवेश जी ने अपना पद त्यागकर गरीबों, मजदूरों, किसानों आदि की लड़ाई लड़ने के लिए बंधुआ मुक्ति मोर्चा बनाकर इनके अधिकारों की लड़ाई लड़नी प्रारंभ कर दी। स्वामी जी महाराज लाखों मजदूरों को बंधुआ मजदूरी से मुक्त कराया और आजीवन उनके हक की लड़ाई लड़ते रहे। आज हम सब ऐसे महान् संन्यासी की तीसरी पुण्यतिथि पर उन्हें याद करते हुए यह संकल्प लेते हैं कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज के समाजोपयोगी कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना पूरा जीवन लगायेंगे।

डॉ. मुमुक्षु जी ने स्वामी अग्निवेश जी महाराज की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर अपने विचार रखते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज की स्मृति में एक केंद्र बनना चाहिए। उन्होंने बताया कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज ने अपना पूरा जीवन समाज की उन्नति एवं गरीब, मजदूर के हक की लड़ाई में समर्पित कर दिया। स्वामी जी महाराज आर्य समाज के विचारों के सच्चे संवाहक थे। स्वामी दयानन्द जी के विचारों एवं आर्य समाज के सिद्धान्त पर चलने वाले वे एक मात्र ऐसे

संन्यासी थे जिन्होंने हमेशा सत्य को सत्य कहा वे कभी भी असत्य के आगे नहीं झुके।

प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र जी ने स्वामी अग्निवेश जी महाराज की तीसरी पुण्यतिथि पर उन्हें याद करते हुए कहा कि कलकता के आराम को छोड़कर उन्होंने हरियाणा एवं पूरी मानवता के लिए आर्य समाज के माध्यम से कार्य किया। स्वामी अग्निवेश जी भी चाहते तो मौज की जिन्दगी जी सकते थे, परन्तु उन्होंने अपनी प्रोफेसर की नौकरी को छोड़कर आर्य समाज के सिद्धान्तों और स्वामी दयानन्द जी के विचारों के आधार पर कार्य करने के लिए हरियाणा को अपनी कर्मस्थली बनाकर स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के साथ मिलकर कार्य किया। स्वामी जी महाराज ने अपनी भरी जवानी में अपने जीवन को तपाकर समाज सुधार के कार्यों में अपना पूराा जीवन लगा दिया। ऐसे महान् संन्यासी को शत्–शत् नमन है। आज हम सबको उनसे प्रेरणा लेकर त्याग भाव से समाजसेवा के कार्यों को करना चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर डॉ. भूप सिंह, डॉ. आर. एन. यादव, प्रिंसिपल आजाद सिंह, वेद प्रकाश आर्य, डॉ. स्वतंत्रतानंद, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या आदि ने संबोधित किया। इस पुण्यतिथि के अवसर पर आसपास के कई गांवों की आर्य समाजों के अधिकारी, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, श्री अवनीश खोखर, रठौड़ा, बागपत, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, डॉ. रणवीर खासा, श्री जितेन्द्र सिंह, श्री विजेन्द्र मलिक, डॉ. राजेश आर्य, श्री पवन आर्य, श्री विजयपाल आहुलाना, परिषद् के प्रदेश कार्यकारी प्रधान श्री सज्जन सिंह राठी, मास्टर प्रदीप जी, मा. ऋषिराज शास्त्री, श्री नफे सिंह आर्य, माता मूर्ति देवी, श्री विष्णुपाल आर्य, प्रिं. आजाद सिंह, श्री मकेन्द्र आर्य, श्री बाबूलाल आर्य जूई, श्री राम निवास यादव, अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती पहलवान अन्तिम कुण्डू, रोजगार अधिकारी कु. शशि आर्या, प्रो. सुनीता खासा, मोनिका आर्या, प्रीति आर्या, अंजलि आर्या, एकता आर्या, पूनम कुण्डू, पूनम आर्या एवं शक्ति आर्या, श्री जावेद जी, श्री शाहिल, श्री बंटी, श्री ईश्वर सिंह, पं. नेरश, श्री कृष्ण आर्य, श्री भूप श्योराण एवं सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में

विशाल आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 23 सितम्बर, 2023 शनिवार (शहीदी दिवस)

स्थान – खटकड़ टोल, जिला–जीन्द (हरियाणा)

अध्यक्षता : पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

कार्यक्रम

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 बजे
यज्ञ ब्रह्मा : **डॉ. अमरजीत शास्त्री**, धर्माचार्य आर्य समाज न्यूयार्क (अमेरिका)
वेद पाठ : शिव गुरुकुलम (ग्राम–छातर) की कन्याओं द्वारा
प्रवचन : **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**, प्रधान श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्
भजन : **श्री सुनील शास्त्री**, उचाना (जीन्द)
ध्वजारोहण : प्रातः 10.15 बजे
: **चौ. हरि सिंह सैनी पूर्व मंत्री हरियाणा द्वारा**

संस्कृति रक्षा सम्मेलन (10.30 से 1 बजे तक)

अध्यक्षता : **पं. माया प्रकाश त्यागी**, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
मुख्य अतिथि : **प्रो. विट्ठलराव आर्य**, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
मुख्य वक्ता : **सरदार किरणजीत सिंह सिन्धु,** (शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे)
विशिष्ठ अतिथि : **स्वामी ओमवेश**, विधायक, पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार
: **स्वामी यतीश्वरानन्द**, पूर्व मंत्री उत्तराखण्ड सरकार
वक्ता : **श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट**, प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा, नई दिल्ली
: **आचार्य प्रेमपाल शास्त्री**, प्रधान आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली
: **श्री बिरजानन्द एडवोकेट**, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
: **बहन पूनम आर्या**, अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान
: **बहन प्रवेश आर्या**, राष्ट्रीय अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद्
: **श्री सतबीर पहलवान**, प्रधान खेड़ा खाप, जीन्द
: **आजाद सिंह पालवां,** युवा किसान नेता
भजन : **श्री सहदेव बेधड़क**, अध्यक्ष भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्

महर्षि दयानन्द द्वि जन्म शताब्दी समारोह (1 से 3 बजे तक)

अध्यक्षता : **स्वामी रामवेश**, प्रधान आयोजन समिति
मुख्य अतिथि : **चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा**, पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा
मुख्य उद्बोधन : **स्वामी आर्यवेश**, नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
वक्ता : **प्रो. वीरेन्द्र**, पूर्व राजनीतिक सलाहकार, मुख्यमंत्री हरियाणा
: **श्री जय प्रकाश**, पूर्व केन्द्रीय मंत्री
मुख्य संयोजक : **स्वामी आदित्यवेश,** राष्ट्रीय महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
संयोजक : **श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट, जीन्द**
भजन : **बहन कल्याणी आर्या,** आर्य भजनोपदेशिका, हिसार

विशेष आमंत्रित

स्वामी यज्ञमुनि (उ. प्र.), स्वामी विजयवेश (गुरुग्राम), स्वामी नित्यानन्द, श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट–प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आचार्य अंशुदेव, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, श्री मधुर प्रकाश, उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, डॉ. नवीन आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् पंजाब, श्री कमल आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश, श्री हरहर आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् झारखण्ड, श्री चन्द्रभान आर्य (अमेरिका), श्री देवा सोलंकी (दुबई), श्री भंवरलाल आर्य, राष्ट्रीय संयोजक आर्य वीरदल, आचार्य हरिदत्त, संस्थापक गुरुकुल लाढ़ौत, श्री दलपल आर्य, पूर्व प्रधान बॉक्सिंग इण्डिया, श्री हरदेव सिंह आर्य, उपमंत्री राजस्थान सभा, डॉ. दीनानाथ शर्मा, अधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, श्री रामानन्द आर्य, उपप्रधान बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा, कु. मुकेश आर्या अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् हरियाणा, श्री बाबूलाल आर्य जूई भिवानी, श्रीमती सिक्किम श्योकन्द (जीन्द)।

(आर्य गौरव सम्मान से विभूषित होने वाले महानुभाव)

1. चौ. हरि सिंह सैनी (हिसार), 2. श्री लाजपत राय चौधरी (करनाल), 3. श्री दयानन्द शास्त्री (टिटौली रोहतक), 4. श्री चन्द्रभान आर्य (पलवल–अमेरिका), 5. डॉ. दर्शना कुमारी आचार्या (कन्या गुरुकुल खरल), 6. चौ. बलवीर सिंह राठी (बलम्भा, रोहतक)

निवेदक

दलबीर आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा	**सज्जन राठी** कार्यकारी अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा	**अशोक आर्य** महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा	**रामनिवास आर्य** राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद	**धर्मबीर गोईयां** प्रदेश अध्यक्ष लोक शक्ति मंच	**रणबीर सिंह ऐडवोकेट** राष्ट्रीय प्रवक्ता नरवाल खाप	**प्रि. आजाद सिंह** राष्ट्रीय उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद	**चौ. अजीत सिंह** पूर्व विधायक
हरपाल आर्य प्रान्तीय कोषाध्यक्ष	**प्रदीप कुमार** प्रान्तीय प्रवक्ता	**प्रो. आनन्द सिंह** अध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा (करनाल)	**रामबीर आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**जयपाल आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**ऋषिराज शास्त्री** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**अजय पाल आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष	**राजदेव आर्य** प्रान्तीय उपाध्यक्ष

चलो जीन्द! चलो जीन्द!! चलो जीन्द!!!

विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला–जीन्द (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक 23 सितम्बर, 2023 (शनिवार) को हरियाणा के खटकड़ टोल, जिला–जीन्द में 'विशाल आर्य महासम्मेलन' आयोजित किया गया है। इस विशाल आर्य महासम्मेलन में अधिक से अधिक आर्यजन अपने परिवारजनों एवं साथियों सहित पधारकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

YES, WE BELIEVE - DAYANANDA WILL BE HONOURED AS A RISHI ?

– Bhavesh Merja

Swami Dayananda Saraswati (1825-1883) was a Rishi - a Sage - a Seer – if he is judged analytically and without any bias. His followers, admirers and members of Arya Samaj call him Great Rishi or 'Maharshi'. But those who are not his followers or disagree with his principles and ideas may think of him differently. One should not quarrel with them on this issue. It is their freedom. However, we would like to present herewith few points regarding Dayananda and his excellence as a Seer for serious deliberation of the readers:

(i) When we read with open mind Dayananda's life and thoughts through his works and biographies, it becomes quite clear to us that he was a Sage, a Seer – a Drashtaa – of the highest order. He was a genuine truth-seeker, who saw the true law of things directly through the inner vision of intuition. As an inspired seer, he saw the hidden truths of existence and heard the Divine Words. He was a giant spiritual force capable to guide the entire humanity towards life fulfillment and perfection.

(ii) It is obvious that man as such does not create any new or fresh knowledge. He merely discovers it already existent or working in the nature. Therefore, modern science and its discoveries are nothing but a kind of 're-search'. The entire mankind including the Rishis (seers) can neither create a blade of grass nor a petal of flower. It is not given to them to create a single law. They can merely read and discover for themselves what has been written in the revealed knowledge-book the Vedas and what has been in operation in the Nature. That is why the Vedas say: Devasya pashya kaavyam na mamaar na jiryati. (Atharva: 10.8.32) means see the Divine poetry of the Vedas and the open book of creation. Dayananda was also one of such great seers of the eternal truths and laws – rit. Maharshi Yaska says in Nirukta: Rishi darshanaat (2.11). Dayananda possessed that capacity of seeing things with a vision of truth. He was a real Daarshanik – a Mantraarthvit – a Drashtaa. He was endowed with keenness of vision.

(iii) The word Rishi is derived from - 'Rishi gatau'. This means a person is entitled as Rishi if he is a man of extraordinary wisdom, seer of the inner nature of things, knower of the true meaning of the Vedas. Dayananda had acquired such competence. In Nirukta (13.1.12) it is said: 'Tarko Rishi' i.e. a person having highly developed faculty of reasoning enabling him to reach to the truth is called Rishi. Dayananda was highly logical and rational. His capability to use right sort of reasoning and evidence of inference for ascertainment of truth was just fantastic and he adopted a process of reasoning in presenting the most difficult and abstruse subjects in a very clear and comprehensible manner. This exemplifies his Rishitva. Nirukta further says:

Saakshaatkritadharman rishiyo babhuvuh – means a person who has realized the fundamentals of righteousness or dharma into his life is called a Rishi. Dayananda has exemplified the Vedic principles and ideals in his practical life. He visualized and fully grasped the true meaning of Vedic texts having manifold significations and lived up to the laws of dharma. He practiced the Vedic ideals and dedicated himself for the propagation of righteousness and Vedic teachings in the most adverse times and circumstances.

(iv) Dayananda had genuine curiosity to know the exact meaning of Veda Mantras (verses). While writing Veda Bhashya (commentary on the Vedas) he used to pose to his own intellect the question as to what could be the most scintific and correct meaning of this Mantra? He exercised his intellect and reasoning faculty for the complete understanding of the significance of the Mantras. It was not just a scholarly work for him; rather he took it as a spiritual pursuit. He was aware that the Mantras cannot be interpreted in an off-hand manner just by hearing them or with the help of reasoning alone. They ought to be deciphered with due regard to their context, i.e., with reference to what precedes and what follows and the valuable hints provided by the ancient authoritative works of the Rishis. All such vital points were taken as the basis of his Veda-Bhashya.

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

(v) From time to time Dayananda was advised by some of his friends to write Veda-Bhashya, but initially he did not agree for the same, understanding that the interpretation of the Vedas demands certain extra-ordinary qualities and spiritual powers and thought as and when he would find himself competent for the same, he would like to venture for the same. It seems that in or around 1875 he should have realized that he had gained that necessary qualities and self confidence for this great task of interpretation of the Vedas. He made himself fully competent to expound the true meanings of the Vedas. We can say that by that time he might have acquired the Rishitva (excellence of the Rishi), and he therefore commenced his Veda-Bhashya. He was fully aware of the fact that a man, who is not a rishi, who has not performed the austerities (Tapas), whose mind is not pure and who does not possess adequate learning and scholarship, cannot realize the true meanings of the Mantras. Only a man who is fully acquainted with the context of the mantras, having the necessary qualifications for realizing their deeper senses and endowed with the highest kind of erudition can be in a position to grasp the true meanings of the Vedic verses. Logic and reasoning power alone would not make one competent in this special task.

(vi) In Nirukta it is described that once upon a time men saw that they were left without any rishis, i.e., the seers of the Mantras. Thereupon they approached to the learned persons and asked them as to who should be the rishi among them. The learned gave them reasoning as their rishi, so that by knowing the truth from falsehood they might be able to understand the meaning of the Vedas and told them by way of reply that reasoning would be the rishi among them. By reasoning here it is meant that kind of it whose only solicitude is elucidation of the meaning of the Vedas and which can lead one to the true knowledge of the Vedas. Dayananda possessed and demonstrated such extraordinary reasoning faculty. He was a thoroughly learned man, well-versed in Vedic lore and Sanskrit language, who explained the meaning of the Vedas in such a way that his explanation became the explanation of the rishi. He was not a man of mediocre learning and intellect. Nor was he partial or biased. He in fact wished that his followers and members of the Arya Samaj should persistently strive for search of Truth. One can refer principles of the Arya samaj.

Dayananda studied thousands of Sanskrit works and enriched his stock of knowledge. In a small book named Bhraantinivaaran he made a declaration at one place that after due study and examination, he was of the opinion that starting from Rig Veda up to Poorva Mimaansaa of Jaimini almost three thousand books he held as authentic and worthy of acceptance. One can imagine his vast learning. Sri K.M. Munshi has rightly said in his book 'The Creative Art of Life' that "Dayananda was learned beyond the measure of man.

At one place in his Rigvedaadi Bhaashya Bhumikaa, Dayananda has expressed that his bhaashya is of Rishi's standard. There he has written:

In the Vedic commentary we shall refer to the action portion only in so far as it will be deducible directly from the meaning of the words. We shall not, however, give a detailed description of the acts which ought to be performed in the various yajnas, from the Agnihotra to the Ashvamedha, according to the mantras which have been applied to the action portion. The reason is that the true application of the mantras to the action portion and the details of the observances are given in the Aitareya and Shatapatha Braahmanas, the Purva Mimaansaa, and the Shrouta Sutras, etc. Their repetition will disfigure this commentary with the faults of tautological repetition and the grinding of a ground meal which disfigure the books not written by Rishis. This means that he believed that his book should be as superb as that of a Rishi's book.

(vii) In spite of such excellence, Dayananda never wished that his name should be listed in the list of those rishis whose names are mentioned in the Veda Samhitaas for remembrance by the posterity. He was not that ambitious. He was not at all competing with those great rishis of yore. He did not work for that purpose. It was not his intention. However, we believe that future generations will definitely evaluate and honor his importance and unique contribution in the field of Vedic study and revere him as a great rishi.

दिल्ली चलो दिल्ली चलो दिल्ली चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 45वें स्थापना दिवस पर

'महर्षि दयानंद 200 वी जयंती महोत्सव'

रविवार 8 अक्टूबर 2023, प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक

स्थानः आर्य समाज, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली (निकट मेट्रो स्टेशन लाजपत नगर)

अध्यक्षता : डॉ. अशोक के चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी शिक्षण संस्थान)

मुख्य अतिथि : श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी (केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार)

श्री प्रवेश वर्मा जी (संसद सदस्य)

देश भर से चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम

प्रातः नाश्ता सुबह 9.30 से 10.30 तक एवम प्रीति भोज दोपहर 2 से 3 बजे तक

आप सादर आमंत्रित हैं। बाहर से पहुंचने वाले प्रतिनिधि शीघ्र सूचित करें जिससे आवास, भोजन आदि का प्रबन्ध किया जा सके

निवेदकः

अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष) महेन्द्र भाई (राष्ट्रीय महामंत्री) देवेन्द्र भगत (राष्ट्रीय मंत्री) धर्मपाल आर्य (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

अपमान एवं निन्दा से पेरशान न हों

– सुभाष लखोटिया

यदि आप जिन्दगी में सुख और शांति पाना चाहते हो और जिन्दगी के लुत्फ का आनन्द लेना चाहते हो तो ये बात अवश्य ध्यान रखो कि अपमान एवं निन्दा को अपनी कार्य प्रणाली पर हावी न होने दें। जो व्यक्ति आपकी निन्दा अथवा अपमान करते हैं उनके प्रति भी समभाव रखने से लाभ आपका ही होगा। ऐसे व्यक्तियों के प्रति द्वेष रखने से आपका मन मलिन होगा और अनेक प्रकार की बीमारियों से आप ग्रस्त हो जायेंगे। अपने ही करीबी रिश्तेदारों, परिजनों, दोस्तों से जब किसी बात पर अपमान सहना पड़ता है अथवा आपको नीचा दिखलाने के लिए कोई व्यक्ति अपमानित कार्यवाही करता है जिससे आपको अपमानजनक महसूस हो उस समय आपका चेहरा तिलमिलाने लगता है आप अपना आपा खो देते हैं अपने मस्तिष्क को अपने वश में नहीं कर पाते और अन्त में नुकसान अगर होता है किसी का तो वह केवल आपका स्वयं का होता है अगर आपकी आध्यात्मिकता की तरफ थोड़ा सा भी रूझान है तो आप पायेंगे कि जब कभी भी कोई व्यक्ति आपका अपमान, निन्दा या अनादर करे और चाहे बोले अपमानजनक भाषा उन सभी अवस्थाओं में बिना बिचलित हुए आपका जो अपमान अथवा अनादर या निन्दा की गई उसको अपने दिल पर अथवा शरीर पर कदाचित नहीं लगने दें।

जरा सोचें कि मेरे शरीर में सबसे महत्त्वपूर्ण अंश जो है वह तो है मेरी अपनी स्वयं की आत्मा और अगर निन्दा और अपमान मेरी आत्मा को छू ही नहीं सकते तो ऐसी अवस्था में मेरे ऊपर कोई भी असर नहीं होने वाला है किसी भी प्रकार के अपमान अथवा निन्दा का। ऐसा विचार सख्ती से सोचें। प्रारम्भ में ऐसे विचारों को ग्रहण करने की हो सकता है, आपमें सामर्थ्य अथवा शक्ति नहीं हो परन्तु प्रभु स्मरण करके अगर आप ऐसा सोचेंगे तो निश्चित रूप से आप पायेंगे कि आप ऐसे दिव्य पुरुष बनते जा रहे हैं जिन्हें लोगों द्वारा किए गए अपमान और निन्दा और अपमानजनक शब्दों का कोई भी असर नहीं है क्योंकि उस समय आप यह मानने लग जायेंगे कि अगर असर होता तो मेरी आत्मा पर होता अच्छा या बुरा परन्तु मेरी अपनी आत्मा जो सूक्ष्म रूप से मेरे ही अन्दर रखी हुई है उस आत्मा को तो किसी भी प्रकार से अपमान एवं निन्दा का असर ही नहीं होता है और जब आत्मा को किसी प्रकार से इन बातों का असर नहीं होता है तो मैं ऐसा मूर्ख क्यों बनूं जो अपमान एवं निन्दा को अपने दिल तक ले जाऊँ और उससे होने वाले नुकसान का शिकार बनूँ।

मेरा यह मानना है कि अगर सख्ती से इस बात को बार–बार साचेंगे तो निश्चित रूप से प्रभु कृपा के सहारे हम हमारे ऊपर होने वाले अपमान अप्रिय व्यवहार और अनादर को ऐसा सहन कर लेंगे कि अगर हम ग्रहण ही नहीं करें तो हमारे शरीर पर, मन पर किसी प्रकार का प्रतिकूल प्रभाव पड़ने वाला नहीं है यह बात बार–बार विचार करें और तब आप पायेंगे अगर आपने लोगों द्वारा, रिश्तेदारों द्वारा, सभा समाज के व्यक्तियों द्वारा अपमान और निन्दा अपने बारे में सुनी और सुन रहे हैं तो आपको कोई भी असर नहीं होगा और न ये गतिविधियाँ आपके शरीर को खराब करेंगी, बार–बार ये एक ही विचारधारा ध्यान रखें कि मेरी आत्मा पर जब जिसका असर नहीं हो रहा है तो मुझे क्या परवाह है ऐसी बातों से जिसे अगर मैं ग्रहण करूँ तो मेरी तबियत पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। वास्तव में जीवन की राह में चलते–चलते जब हम देखते हैं कि बिना हमारी गलती के भी कई बार हमें अपमानित होना पड़ता है और जिसे हम अपना सोचते थे वे ही कोई बात पे या अहम भाव के कारण हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं हमारा अनादर करते हैं तो साधारण मनुष्य को उससे दिल में पीड़ा होती है एक अलग तरह की कशिश होती है जिसे वह सहन नहीं करता और प्रतिद्वन्द्विता की आग में जलता रहता है जिसका सीधा नुकसान उसके स्वयं के शरीर या उसके चित्त पर पड़ता है अतः हमें चाहिए कि हम बार–बार एक ही बात ध्यान रखें कि सबसे महत्त्वपूर्ण है मेरी आत्मा और जब इस आत्मा पर किसी के अपमान एवं निन्दा का असर नहीं हो रहा है तो मैं क्यों परवाह करूँ किसी के द्वारा किये गये अपमान अथवा निन्दा का?

हाँ, साथ ही साथ प्रत्येक व्यक्ति को समय–समय पर अपना आत्म चिन्तन अवश्य करना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि अगर उसके द्वारा किया गया कार्य अपमानजनक या निन्दाजनक वास्तव में है तो अपने आपको निश्चित रूप से सुधारना चाहिए जब आत्म निरीक्षण से यह पता चले कि हमारी गलती ही नहीं है किसी भी प्रकार से न हमारी भूल है परन्तु लोग हमें गलत समझ रहे हैं और हमारा अपमान कर रहे हैं हमारी निन्दा कर रहे हैं, हमारे ही अपने परिवार के परिजन हमें आदर सम्मान नहीं दे रहे हैं, तो ऐसी बातों को अपने दिल तक नहीं लगाना चाहिए और ऐसी बातों को आई–गई कर देना चाहिए, एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देना चाहिए तब आप पायेंगे कि वास्तव में आपका मन निर्मल है स्वयं निर्मल हृदय, आनन्द वाणी अपनाने का कार्यक्रम सजग बनाए रखेंगे तो आप पायेंगे कि वास्तव में समस्या किसी भी प्रकार की नहीं है और आने वाला आज और आने वाला कल हमेशा स्वर्णिम ही होता जायेगा आपके लिए जीवन एक नई आशा की किरण देता जायेगा। प्रतिदिन जीवन की मौज आनन्द और मस्ती का भरपूर लाभ आप लेते जायेंगे और यह सब तभी सम्भव है जब आप केवल इस बात को ध्यान में रखें कि जब अपमान और निन्दा एवं दुर्व्यवहार अथवा अनादर मेरी आत्मा पर किसी भी प्रकार का असर नहीं कर सकते तो मैं ऐसा मूर्ख मानव क्यों बनूँ कि छोटी–बड़ी बात पर अपने दिल को उन बातों से जोड़ लूँ और दुख की तरफ अग्रसर होऊँ। सच्चा सुख जिसे पाने की प्रत्येक मनुष्य की ललक है वह तब सम्भव होगा और हम पायेंगे कि अपमान एवं निन्दा की कसक से हम कोसों दूर चले गये हैं।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- **www.facebook.com/SwamiAryavesh** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज मीठापुर, पटना (बिहार) में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की तृतीय पुण्यतिथि

प्रेरणा एवं संकल्प सभा के रूप में मनाई गई

स्वामी अग्निवेश जी मानवता के सच्चे प्रहरी थे – रामानन्द प्रसाद आर्य

स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज की विचारधारा को पूरे विश्व में पहुंचाया – विद्यानन्द केशरी

स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक आर्य संन्यासी थे – अरुण आर्य

10 सितम्बर, 2023 को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की तृतीय पुण्य तिथि प्रेरणा एवं संकल्प सभा के रूप में आर्य समाज मंदिर मीठापुर, पटना (बिहार) के सभागार में श्री विद्यानन्द केशरी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री रामानन्द प्रसाद आर्य जी, श्री अशोक शास्त्री, श्री गणेश प्रसाद, श्री सुदामा आर्य, श्री जिज्ञासु, श्री सतेन्द्र, श्री गौरव, श्री अरुण आर्य सहित अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

इस प्रेरणा एवं संकल्प सभा में मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखते हुए बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री रामानन्द प्रसाद आर्य जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश इस सदी के महामानव थे। मानवता के प्रहरी के रूप में अपना सारा जीवन लगा दिया। स्वामी अग्निवेश जी महाराज आर्य समाज के सच्चे नेता थे। वे आर्य समाज के सिद्धान्तों से कभी भी समझौता नहीं किया वे सच्चे मायने में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार पूरे विश्व में बेबाकी तरीके से रखते रहे। स्वामी अग्निवेश जी अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किये जिन्हें साधारण लोग सोच भी नहीं सकते। सती प्रथा के खिलाफ आन्दोलन करके कानून बनवायो, नाथद्वारा मंदिर में हरिजनों का प्रवेश कराया, गरीबों, मजदूरों की हक की लड़ाई लड़ते रहे और उन्हें उनका हक दिलाने का कार्य करते रहे। ऐसे तेजस्वी संन्यासी को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आज उनकी तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनके द्वारा किये गये कार्यों से पुनः प्रेरणा लेकर समाज में कार्य करने का संकल्प लेता हूँ।

संकल्प सभा की अधक्ष्यता कर रहे श्री विद्यानन्द केशरी जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी सही मायने में स्वामी दयानन्द जी के विचारों को देश–दुनिया में प्रचारित करने का कार्य किया। स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज के सिद्धान्तों और वैदिक मूल्यों से कभी भी समझौता नहीं किया। ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी को आज हम पुनः याद करते हुए उन्हें नमन करते हैं।

कार्यक्रम के संयोजक श्री अशोक शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी जैसा तेजस्वी आर्य संन्यासी मिलना मुश्किल है। आज स्वामी अग्निवेश जी की तीसरी पुण्यतिथि पर हम उन्हें याद करते हुए यह संकल्प लेते हैं कि उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने में लगे रहेंगे।

दयानंद विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री गणेश प्रसाद जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी द्वारा किये जा रहे कार्यों को अमली जामा पहनाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री सुदामा आर्य ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी समाज में भाईचारा एवं शांति स्थापित करने पर जोर देते रहे।

डॉ. जिज्ञासु जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी अन्याय, शोषण एवं पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते रहे।

दयानन्द विद्यालय के प्राचार्य श्री सतेन्द्र जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी बंधुआ मजदूरों तथा बाल मजदूरों की दशा सुधारने के लिए सतत प्रयास करते रहे।

कन्या विद्यालय के अध्यक्ष श्री गौरव जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी महिलाओं के सम्मान एवं उत्थान के लिए आवाज बुलंद करते रहे। सर्वप्रथम स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में ही वर्ष 2005 में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जन्म स्थली टंकारा से लेकर अमृतसर तक 15 दिवसीय कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ जन–जागरण अभियान चलाया गया, जिसे तत्कालीन केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों ने बड़ा मुद्दा मानते हुए अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया था।

श्री अरुण आर्य ने कहा की स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक संन्यासी थे वे कभी भी अन्याय के खिलाफ झुके नहीं और वैदिक सिद्धान्तों से समझोता नहीं किया। इनके अतिरिक्त श्री सुनील कुमार एवं श्री प्रमोद शास्त्री ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में शांति पाठ के पश्चात् सभा की कार्रवाई समाप्त हुई।

।।ओ३म्।।
मानव सेवा प्रतिष्ठान
सेवा हि परमो धर्मः
स्थापना : 1998 ई०
60-बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-29
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024
200वीं
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर
मानव सेवा प्रतिष्ठान
MANAV SEWA PRATISTHAN
60बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली–110029
का
रजत जयन्ती समारोह
SILVER JUBILEE CELEBRATIONS
दिनांक : 23 व 24 सितम्बर, 2023 (शनिवार एवं रविवार)
स्थान : गुरुकुल गौतम नगर,
(निकट ग्रीन पार्क मेट्रो स्टेशन) नई दिल्ली–49
उपरोक्त कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित हैं।
निवेदक :
चन्द्रदेव शास्त्री (प्रधान)
डॉ. कंवर सिंह शास्त्री (महामंत्री)
रामपाल शास्त्री (कार्यकर्ता प्रधान)
सम्पर्क सूत्र :
9810283782, 9868365727, 9416711417,
9999027992, 9968914743

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।